International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-01-2021; Accepted: 07-02-2021; Published: 03-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 07-11

हिंदी फ़िल्मों के माध्यम से हिंदी का प्रचार - प्रसार

डॉ शारदा प्रसाद

एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, रामगढ़ महाविद्यालय, रामगढ़ कैंट, झारखण्ड, भारत

सारांश

हिंदी फिल्म जगत का जो सफरनामा 3 मई 1913 को आरंभ हुआ था वह आज अपनी सफलता के प्रखर दौर में पहुंच चुका है, किन्तु यह अंतिम सोपान नहीं है। अभी तो इसे अपनी बुलंदियों के चरम तक पहुंचना है । सिनेमा मनोरंजन का तो एक अत्यंत लोकप्रिय और किफायती साधन है तथा इसकी पहुंच सिर्फ भारत के दूर -दराज के इलाकों में ही नहीं अपितु विश्व के सुदूर प्रदेशों तक है। आज पूरे विश्व में इसका बाजार अंगदके पांव के समान जमा चुका है और समृद्धि में नित नए प्रतिमान गढ़े जा रहे हैं। हिंदी सिनेमा ने सिर्फ मनोरंजन को ही नहीं वरन सामाजिक सरोकारों को अपना गंतव्य और मंतव्य बनाया है। सिनेमा दृश्य माध्यम है और इसकी पकड़ आम जनता पर सीधी होती है। अपनी संवाद शैली और अभिनेयता, दृश्यतामकता व विभिन्न मनोरंजक कारकों के कारण दर्शकों पर सीधा प्रभाव छोड़ता है ।यही कारण है किइसकी लोकप्रियता आसंदिग्ध रही है। साहित्य समाज का दर्पण होता है यही सिनेमा में भी चरितार्थ होता है । हिंदी सिनेमा ने अपने 100 वर्षों की यात्रा में भारतीय जीवन की समस्याओं को शिद्दत के साथ उठाता आया है। विश्व भर में हिंदी सिनेमा का बाजार और उसकी लोकप्रियता सबसे अधिक है । हिंदी के प्रचार- प्रसार का जो कार्य सरकार करोड़ों रुपये खर्च कर के भी नहीं कर पायी वह कार्य सिनेमा ने आसानी से कर दिखाया है। हिंदी के प्रचार - प्रसार में हिंदी सिनेमा ने अभूतपूर्व सफलता अर्जित की है । हिंदी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता आज विश्व भर के लोगों की जुबान पर चढ़ कर बोल रही है ।वह हिंदी जानते हो या नहीं किंतु हिंदी गीत अक्सर गुनगुनाते रहते हैं। हिंदी गीतों के माध्यम से कितने ही हिंदी भाषी रोजगार प्राप्त कर चुके हैं। थाईलैंड,ऑस्ट्रेलिया, दुबई,अफगानिस्तान, मॉरीशस इत्यादि देशों की यात्रा के दौरान हिंदी की लोकप्रियता देखने को मिली। 'स्पाइडर मैन', 'जुरासिक पार्क',' कैसिनो रॉयल' इत्यादि फिल्मों के अंग्रेजी संस्करण ने जितना मुनाफा नहीं कमाया उतना हिंदी संस्करण ने कमाया । आर्थिक और वाणिज्य- व्यापार की दृष्टि से देखें तो हिंदी सीखना और हिंदी को अपनाना आज उनकी मजबूरी बन गई है । हिंदी सिनेमा के माध्यम से आज हिंदी विश्व भर में लोकप्रिय हो रही है, इसमें कोई संदेह नहीं है। आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो मंदारिन दूसरे स्थान पर हैं और हिंदी तीसरे स्थान पर है,जो इसकी लोकप्रियता को दर्शाती है।

मूलशब्द: सफरनामा, सामाजिक सरोकार, मातृभाषा, स्वाभिमान, संस्कृति

प्रस्तावना

भारतीय फिल्मों का जो सुनहरा सफर 3 मई 1913 को आरंभ हुआ था उसने विविध सोपानों को तय करते हुए आज विश्व में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहा है। हिंदी फिल्में विश्व भर में इतनी लोकप्रिय हैं कि इसकी लोकप्रियता में भाषा की समस्या आड़े नहीं आती। हिंदी फिल्में और इसके गानों को लोग दीवानगी की हद तक चाहते हैं ।जब हम ताशकंद शहर का भ्रमण कर रहे थे तब 21 जून 2018 को जो दृश्य उत्पन्न हुआ, वह हमें भाव विभोर कर गया। हमें देखकर एक लड़के ने प्रसन्न मुद्रा में राजकपूर अभिनेता के ही अंदाज में 'श्री 420' का गाना 'मेरा जूता है जापानी, यह पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' गाकर हमारा

स्वागत किया। यह साबित करता है कि हिंदी फिल्मों के गानों के प्रति विश्व में कितना लगाव है ।

विश्व भर में सिनेमा ने अपने सामाजिक सरोकारों को रजत पटल पर बड़ी खूबसूरती एवं बेबाकी से उठाया है। हिंदी सिनेमा ने अपनी 100 वर्षों की यात्रा में भारतीय जीवन के विभिन्न आयामों को पूरी शिद्दत के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। प्रसून जोशी का मत उल्लेखनीय है "देश से सिनेमा को निकाल दें तो शायद देश का दिल ही निकाल लेंगे। मेरा मानना है कि हमारे देश का दिल सिनेमा में बसा हुआ है। हमारे देश काअहम हिस्सा है सिनेमा । यह 100 साल की वह धड़कन है जो हर किसी के दिल में धड़कती है। हमारी जिंदगी से लैंग्वेज के कई पहलू हट जाएंगे अगर सिनेमा ना रहे ।" 1 भारतवर्ष विभिन्नताओं के बावजूद एकता का देश है। पूरे भारतवर्ष में अनेक बोलियां और भाषाएं बोली जाती हैं फिर भी भारत एक सांस्कृतिक सूत्र में आबद्ध है। दक्षिण भारत में हिंदी का विरोध भले ही हो किंतु हिंदी फिल्में पूरे भारतवर्ष में लोकप्रिय हैं, दक्षिण में भी। दीपक भालचंद्र करपे के अनुसार "कुछ सीमा तक दक्षिण में हिंदी का विरोध है, लेकिन हिंदी फिल्में लोकप्रिय हैं। खासकर तमिलनाडु में हिंदी विरोध किया जाता है लेकिन इसी तमिलनाडु के 3 शहरों मदुरै, चेन्नई और कोयंबटूर में हिंदी फिल्म 'शोले' की स्वर्ण जयंती मनाई थी। 'शोले' के अलावा' हम आपके हैं कौन', 'दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे', 'बॉर्डर', 'दिल तो पागल है',' ग़दर', 'लगान' इत्यादि फिल्में पूरे देश में सफलता के झंडे गाड़ दिए।"2

समीक्षा - हिंदी सिनेमा ने अनेक समस्याओं को पर्दे पर उतारा और उसका समाधान भी ढूंढा। इन्हीं समस्याओं में से एक समस्या है हिंदी के प्रयोग की। भारतवर्ष में अंग्रेजों ने लगभग 200 सौ वरसों तक शासन किया और अंग्रेजी भारत वासियों के रग- रग में इस प्रकार समा गई कि आज आजादी के 73 वर्ष बीत जाने के बाद भी हिंदी राष्ट्र भाषा का गौरव नहीं पा सकी है। आज भी हमारे देशवासी हिंदी बोलने में हीन भावना का अनुभव करते हैं। इस दिशा में फ़िल्मों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्व के 4 फिल्मों में से एक फिल्म हिंदी में बनती है । भारत का फिल्म उद्योग आज विश्व में अपनी मजबूत पकड़ बना चुका है और अर्थव्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ भी बन चुका है। 21वीं सदी का भारतीय सिनेमा, उसका बाजार और प्रभाव देश की सीमाओं तक ही केंद्रित नहीं है । उसने विश्व सिनेमा बाजार में भी अपनी जगह बना ली है। दुनिया में सबसे तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था वाले भारत और संपूर्ण विश्व के विभिन्न देशों में जा बसे भारतीयों और वहां के विकास में उनके प्रभावकारी योगदान के चलते भारतीय सिनेमा अब दुनिया के मनोरंजन बाजार का एक प्रमुख और बड़ा खिलाड़ी बन चुका है।" 3

भारतवर्ष आज भी किस कदर अंग्रेजी भाषा की गुलामी कर रहा है इसे 'इंग्लिश- विंग्लिश' में दिखाया गया है। आज भी नई पीढ़ी औ रनव्धनाध्य वर्ग हिंदी को हेय नज़रों से देखता है और अंग्रेजी को सर - आंखों पर बैठाता है ।इसे ही दिखाने की कोशिश की गई है इस फिल्म में। हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता ही के प्रचार - प्रसार की ओर ईशारा करती है। " हर साल कई सौ करोड़ रुपये इसके निर्माण कार्य पर व्यय हो रहे हैं। संभवत अमेरिका के बाद भारत पहला देश है जो फिल्म निर्माण में विश्व में सबसे आगे है। 1986 में अकेले हिंदी भाषा में 159 फ़िल्मों का निर्माण हुआ। हर वर्ष हम देखते हैं कि हिंदी फिल्मों की संख्या बढ़ती जा रही है । जहां सन 1980 में कुल 742 फिल्में बनी वहीं सन 1988 में कुल 873 फ़िल्मों का निर्माण हुआ।" 4

हमारा विरोध किसी भाषा से नहीं है लेकिन अपनी मातृभाषा सर्वोपरि है । आज चीन, जापान इत्यादि देश अंग्रेजी के कारण नहीं वरन अपनी मातृभाषा को लेकर विकास के नए प्रतिमान गढ़ रहे हैं और चीन की भाषा मंदारिन तो विश्व की दूसरी भाषा का दर्जा पा गई है। नौकरी पाने के लिए इंग्लिश भले ही जरूरी है पर अपनी मातृभाषा को प्रथम स्थान देना ज्यादा जरूरी है। हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी फिल्मों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। मातृभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में कुछ फिल्मों का योगदान निर्विवाद है।

1975 में रिलीज फिल्म 'चुपके-चुपके' में हिंदी के महत्व को बतलाया गया है। यह एक यादगार सुपरहिट फिल्म साबित हुई थी । इस फिल्म में धर्मेंद्र ने डॉ॰ परिमल प्रोफ़ेसर होते हुए ड्राइवर की शानदार भूमिका निभायी और शुद्ध हिंदी से सबका मन मोह लिया। यह एक कॉमेडी फिल्म है किंतु किसी गंभीर मुद्दे से कम

नहीं है। इस फिल्म में धर्मेंद्र, शर्मिला टैगोर, जया बच्चन, अमिताभ बच्चन, ओमप्रकाश आदि ने अपने अभिनय का लोहा मनवाया ।

इसी प्रकार 1979 में प्रदर्शित फिल्म 'गोलमाल' ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभाई। इस फिल्म में उत्पल दत्त और अमोल पालेकर की भूमिका चर्चित रही । उत्पल जी ने ठान रखी थी कि वह अपने दफ्तर में उसी व्यक्ति को नौकरी देंगे जो हिंदी की बहुत अच्छी जानकारी रखता हो। नौकरी पाने की लालसा में अमोल पालेकर को दोहरी भूमिका निभानी पड़ी। अंत में अमोल पालेकर हिंदी के महत्व को समझता है।

फिल्म 'नमस्ते लंदन' एक ऐसी फिल्म है जिसमें अपनी मातृभाषा और संस्कृति को विदेशी भाषा और संस्कृति से श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास है। सच्चाई यह है कि आजादी के 73 वर्ष बीत चुके हैं फिर भी हमारे मन - मस्तिष्क से अंग्रेजी और अंग्रेजियत का भूत उतरा नहीं है।हम लंदन जाकर वहां बस कर और उनकी बोली -बानी को अपनाकर अपने आप को सभ्य शिक्षित और श्रेष्ठ समझने लगते हैं जबकि उनकी नजरों में हम आज भी वही सपेरा वाले देश के माने जाते हैं और उनकी नजरों में हमारी कोई इज्जत नहीं है। इस फिल्म में यही दिखाने का प्रयास किया गया है। विदेशी भाषा सीखना या विदेशी भाषाएं जानना बहुत अच्छी बात है किंतु अपनी भाषा के अपमान और उपेक्षा की शर्त पर नहीं। हमारी मातृभाषा से ही हमारी पहचान है, हमारी प्रतिष्ठा है, हमारा स्वाभिमान है। हमें हर हाल में इसकी रक्षा और सम्मान करना आना चाहिए। फिल्म में जसमीत लंदन में रह रहे पिता के कारण वहां के ही रंग में इतना रंग गई है कि अपना नाम तक बदल डाला और जसमीत के स्थान पर जाज़ रख लिया है। वहीं अर्जुन पंजाब का देशभक्त और हिंदी प्रिय युवक है। जब जाज़ (जसमीत) की उसके अंग्रेज दोस्त चार्ली से विवाह की पार्टी दी जाती है । वहां अर्जुन को और भारत को वहां उपस्थित अंग्रेजों के द्वारा नीचा दिखाया जाता है, तब अर्जुन हिंदी भाषा में भारत और हिंदी का गुणगान करते हुए अपने स्वाभिमानी भारतीय होने का परिचय देता हैं और कहता है कि भारत एक ऐसा देश है जहां एक कैथोलिक महिला एक सिख व्यक्ति के लिए प्रधानमंत्री का पद त्याग देती है और सिख प्रधानमंत्री एक मुस्लिम राष्ट्रपति से शपथ ग्रहण करता है।

अर्जुन मिस्टर प्रिंगल को भारतीय संस्कृति 'हाथ जोड़कर नमस्ते' करके बतलाता है कि हम हाथ जोड़कर सब का सम्मान करते हैं। लेकिन भारत ही वह देश है जहां अंग्रेजी सबसे ज्यादा बोली जाती है। भारत की गुलाम मानसिकता का परिचय देते हुए कहता है कि यह भारत देश ही है जहां अंग्रेजी सबसे ज्यादा घसी जाती है। वह कहता है कि आपको शायद मालूम नहीं कि आपकी मातृभाषा अंग्रेजी के ज्यादा शब्द संस्कृत से लिए गए हैं। संस्कृत का शब्द मातृ से मदर, भ्रातृ से ब्रदर, ज्यामिति से ज्योमेट्री, त्रिकोणमिति से ट्रिज्नोमेट्री शब्द बना है। हमारे देश में आपके देश से ज्यादा अखबार छपते हैं। 21 भाषाओं में पढ़ने वालों की संख्या 12 सौ करोड़ है और 5600 अखबार छपते हैं। हम चांद पर पहुंच गए हैं फिर भी हम आप लोगों को सपेरा और गंवार ही नजर आते हैं। हम किसी को छोटा और बड़ा नहीं समझते वरन हाथ जोड़कर नमस्ते कहकर सबको सम्मान देते हैं और अंत में जसमीत वैवाहिक बंधन की महत्ता को समझती है तथा अर्जुन, जिससे भारत में उसका विवाह हुआ था, उस विवाह को स्वीकार करती है और भारतीय संस्कृति की महत्ता को समझती है।

भारतीय विश्व के कोने-कोने में बसे हुए हैं और हिंदी फिल्में विश्व भर में लोकप्रिय हैं। जो हिंदी बोल नहीं पाते हैं वह भी फिल्में देख- देख कर काम चलाओ हिंदी सीख लेते हैं और हिंदी तो व्यापार- वाणिज्य के लिए विश्व भर में सीखी और बोली जा रही है, जिसमें फिल्मों की बहुत बड़ी भूमिका है।

'हिंदी मीडियम' फिल्म का भी हिंदी के प्रचार- प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। भारतवर्ष में हिंदी नहीं आती है कहना या टूटी-फूटी हिंदी बोलना शान की बात समझी जाती है और अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करना सामाजिक प्रतिष्ठा। फिल्म में इसी अंग्रेजी मानसिकता को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। दिल्ली के चांदनी चौक में रेडीमेड कपड़े की दूकान चलाने वाले राज बत्रा के पास धन - दौलत सब कुछ है। बीएमडब्ल्यू कार से घूमता है लेकिन अंग्रेजी नहीं जानता। वह हिंदी मीडियम से पढ़ा लिखा युवक है। उसकी खूबसूरत पत्नी को अपने उच्च वर्ग के लोगों

के बीच इस कारण हीन भावना का बोध होता है। वे दोनों चाहते हैं कि उनकी बेटी अच्छी अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़े और इसके लिए उन्हें अनेक हथकंडे अपनाने पड़ते हैं। राइट टू एजुकेशन का भी इस्तेमाल बेटी के नामांकन करवाने में करते हैं। इसके लिए वे स्लम बस्ती तक में रहने को चले जाते हैं। इस संदर्भ में यह कथन सटीक प्रतीत होता है–" फिल्म इस बात को उठाती है कि अंग्रेजी माध्यम और महंगे स्कूलों की होड़ में माता-पिता बिना सोचे- समझे शामिल हो जाते हैं मानो इन स्कूलों में दाखिला होते हैं उनके बच्चे बड़े आदमी बन जाएंगे। वे इसके लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। यह स्टेटस सिंबल का भी प्रतीक होता है। साथ ही अंग्रेजी ना आने पर हीन भावना से ग्रसित होने की मनोदशा को भी फिल्म में व्यंग्यात्मक तरीके से दर्शाया गया है।" 5

आज हमारे देश की मजबूरी भी यही है कि अच्छी नौकरियों के लिए अंग्रेजी जानना बहुत जरूरी है। फिल्म में शिक्षण व्यवस्था के व्यवसायिक होने पर और अंग्रेजी की महत्ता पर प्रश्न उठाती है और अंत में राज व मीता अपनी बेटी को हिंदी मीडियम के स्कूल में ही दाखिला दिलवाते हैं।

भारतवासी आज तक समझ नहीं पाए कि अपनी भाषा का क्या महत्व है। मातृभाषा ही मनुष्य की आत्मा होती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी भाषा को सभी उन्नति का मूल माना था--

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिनु निजभाषा ज्ञान के मिटे न मन का शूल।।"

फिल्मकारों ने फिल्मों के माध्यम से अपनी भाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार के लिए जो अमूल्य योगदान किया है समाज उसका ऋणी रहेगा।

शोध विधि -प्रस्तुत शोध आलेख तैयार करने में द्वितीयक सामग्री का उपयोग किया गया है। इस क्रम में संदर्भ ग्रंथ, फिल्म, गूगल या वेब लिंक से सूचना एकत्र की गई है।

परिणाम और चर्चा- फिल्म भी साहित्य का ही एक अंग है। हम कह सकते हैं कि फिल्म वह दृश्य- काव्य है जो अनेक मनुष्यों की उच्च कल्पना और वैज्ञानिक संयंत्रों, ध्वनि -प्रकाश के सम्मिलित संयोजन से एक उच्च कोटि का संचार माध्यम है, जिसकी पहुंच हर आम आदमी और खास व्यक्ति तक है। फिल्म देखने के लिए शिक्षित होना अनिवार्य शर्त नहीं है। गरीब-अमीर, शिक्षित -अशिक्षित, हर व्यक्ति तक इसकी पहुंच है और इसका प्रभाव भी है। इसलिए विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, भाषिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, समस्याओं के समाधान में इसकी भूमिका असंदिग्ध है या यूं कहें कि समाज को नई दशा और दिशा देने में समर्थ है। हिंदी फिल्में देश के साथ-साथ विदेशों में भी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी हैं। इस प्रकार इन फिल्मों में देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी हिंदी को प्रोत्साहित किया है। राजकपूर की'आवारा' और 'श्री 420' ने रूस में लोकप्रियता के झंडे गाड़ दिए थे। अमिताभ बच्चन, माधुरी दीक्षित, लता मंगेशकर एवं हिंदी के अन्य कलाकार सारी दुनिया के बड़े-बड़े शहरों में अपनी रंगमंचीय प्रदर्शन सफलतापूर्वक कर चुके हैं। आज भी ऑल इंडिया रेडियो के उर्दू कार्यक्रमों में फर्माइशकर्ता 90 प्रतिशत पाकिस्तानी होते हैं।" 6

हिंदी फिल्मों के कारण विदेशों के कलाकार भी प्रसिद्धि प्राप्त किए। अभिनेत्री ज़ेबा को फिल्म 'हिना' से, सलमा आगा को फिल्म',निकाह' से प्रसिद्धि मिली। तात्पर्य यह कि हिंदी फिल्में सिर्फ भारत में ही नहीं वरन विदेशों में भी हिंदी के प्रचार- प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है।

निष्कर्ष

हिंदी को संवैधानिक रूप से प्रथम राजभाषा का दर्जा तो मिला किंतु उसके प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मों ने अभूतपूर्व सफलता अर्जित की। यह हिंदी फिल्मों का करिश्मा ही है कि विश्व के दूरदराज के क्षेत्रों में भी हिंदी की धूम मची हुई है। हिंदी फिल्मों का बाजार भी विश्व स्तर का है और अंग्रेजी भाषा की फिल्मों को जितना मुनाफा अंग्रेजी भाषा से नहीं होता उसका दोगुना मुनाफा उसके हिंदी संस्करण से होता है।

स्पीलबर्ग की फिल्म 'जुरासिक पार्क' को भारत में इसके हिंदी संस्करण के प्रदर्शन से जितना मुनाफा हुआ वह अंग्रेजी संस्करण का दोगुना था। हिंदी फिल्मों का सफरनामा धार्मिक फिल्मों से हुआ था।'सत्य हरिश्चंद्र' आवाक् फिल्म से यह सफर 'आलम आरा'

सवाक फिल्म से चली तो विभिन्न सामाजिक सरोकारों को लेकर अनेक सोपानों को तय करती हुई आज 'बर्फी', 'तारे जमीन पर',' ब्लैक', 'अंग्रेजी मीडियम', 'हिंदी मीडियम',' नमस्ते लंदन' तक आ पहुंची है। हिंदी फिल्मों ने समाज के विविध पहलुओं पर अपनी मजबूत पकड़ बनाई चाहे वह सामाजिक कुरीति हो, शिक्षा का प्रश्न हो, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सरोकार हो या फिर मानवीय संवेदना या मनोवैज्ञानिक पक्ष हो। हर पहलू पर भारतीय सिनेमा ने समाज को एक दृष्टि प्रदान की तथा उसके समाधान भी प्रस्तुत किए। यही कारण है कि आज हिंदी सिनेमा नित नए प्रतिमान गढ़ने की ओर अग्रसर है। किंतु आज भी हिंदी को अपने ही घर में वह स्थान नहीं मिल सका है जिसकी वह अधिकारीनि है। एक बार पुनः प्रेमचंद, राही मासूम रजा, कमलेश्वर, यशपाल जैसे साहित्यकारों को हिंदी की समृद्ध भाषा- परंपरा को स्थापित करने की दिशा में आगे आना होगा।

संदर्भ सूची

1. अहा जिंदगी, आलोक श्रीवास्तव, जून 2014, पृ 08
2. m-hindi.webdunia.com/hind.
3. shodhganga.inflibnet.ac.in, पृ 118
4. ----do---
5. https;//m-hind.webdunia.com
6. m-hindi.webdunia.com/hind.